सूरदास और पुष्टिमार्ग

डॉ0 सुनीता शर्मा असिस्टेंट प्राफेसर हिन्दी विभाग सेन्ट जॉन्स कॉलेज, आगरा

भक्त प्रवर सूरदास बल्लभाचार्य के शिष्य थे। भक्तिकालीन सगुणधारा की कृष्ण भक्ति शाखा के आधारस्तम्भ एव पुष्टिमार्ग के प्रणेता बल्लाभाचार्य माने जाते है। भक्ति के क्षेत्र में बल्लभाचार्य का ''साधना मार्ग'' ''पुष्टिमार्ग'' के नाम से जाना जाता है। सूरदास एक सन्त थे, जो सभी उपासना पद्दतियो, भक्ति प्रणालियों को समान भाव से देखते थे। उनके काव्य मे बल्लभाचार्य द्वारा प्रतिपादित कृष्ण स्वरूप की प्रतिष्ठा स्वभाविक रूप स हुई है। सूरदास की भक्ति में अन्तःकरण की प्रेरणा तथा अंतर की अनुभूति की प्रधानता है। बल्लभाचार्य द्वारा प्रतिपादित शुद्धाद्वेतवाद के अनुसार ब्रहमा माया से अलिप्त है, इसलिए शुद्ध है। माया स अलिप्त होने के कारण यह अद्वैत है। यह ब्रहमा सगुण भी है और निर्गुण भी। सामान्य बुद्धि को परस्पर विरोधी प्रतीत होने वाली बातों को ब्रहमा मे सहज अर्न्तभाव हो जाता है। वह अणु स भी छोटा और सुमेरू से भी बड़ा है। वह अनेक होकर भी एक है। यह ब्रहम स्वाधीन होकर भी भक्त के अधीन हो जाता है।

श्रीमद्भागवत के द्वितीय स्कन्ध के दशम् अध्याय के चतुर्थ श्लोक में ''पुष्टि'' को परिभाषित करते हुए कहा गया है– ''पोषण तदनुग्रह'' अर्थात् ईश्वर का अनुग्रह (कृपा) ही पोषण है।

बल्लभाचार्य के अनुसार–

''कृष्णानुग्रहरूपा हि पुष्टिः कालादि बाधक''। अर्थात कालादि के प्रभाव स मुक्त करने वाला कृष्ण का अनुग्रह ही पुष्टि है। पुष्टिमार्गी भक्ति का मूल आधार है कि भगवत्कृपा से ही भक्त के हद्य में भगवान के प्रति प्रेम लक्षणा भक्ति जाग्रत होती है। भक्त के भगवान की ओर ध्यान ले जाने स पहले भगवान भक्त पर अपनी कृपा की वर्षा कर देते है। भगवान के इस ''अनुग्रह'' (कृपा) को ही जीव का वास्तविक पोषण अर्थात पुष्टि कहा गया है। यह पुष्टि मार्ग सेवा मार्ग कहलाता है। सेवामार्ग के दो भाग हैः–

(1) नाम सेवा (2) स्वरूप सेवा जिसमे स्वरूप सेवा के तीन प्रकार हैं–तनुजा, क्तिजा और मानसी। इसमें मानसी को प्रधानता दी गई है। अगर भक्त का ध्यान भगवान में नही लगा तो वह अपन शरीर और धन को प्रभु को समर्पित नही कर सकता है। मानसी सवेा के भी दो प्रकार हैं–

(1) मर्यादा मार्गीय (2) पुष्ट मार्गीय

मर्यादा मार्गीय सवेा मे शास्त्री के विधि–विधान आते है जिनके अनूकुल आचरण करने स आत्मशुद्धि तथा आत्मज्ञान प्राप्त होता है। पुष्टि मार्गीय सवेा में समस्त विषयों से पृथक रहकर, समस्त वासनाओं का परित्याग करना पडता है और अपने सर्वस्व को ईश्वर को समर्पित करते हुए सदैव प्रभु और भक्तो की सवेा में सलंग्न होना पड़ता है। सरू में भी इसी पुष्टिमार्गीय मानसी सवेा की प्रमुखता देखी गई है। जिसमें सूर ने कृष्ण को ही अपना परम् ब्रहम माना है, और अपना सर्वस्व कृष्ण के चरणो में समर्पित कर दिया। पुष्टि मार्ग में जीवो मे स्थिति भिन्न–भिन्न बताई गई है, इनकी सृष्टि ईश्वर सवेा के लिए हुई है। इन जीवों को तीन वर्गों में विभाजित किया जा सकता है। (1) प्रवाह पुष्टि जीव (2) मर्यादा पुष्टि जीव (3) शुद्ध पुष्टि जीव

1. प्रवाह पुष्टि जीवः– प्रवाह पुष्टि भक्त की वह स्थिति होती है जिसमें वह संसार में रहते हुए (सांसारिक जन्म–मरण मे बंधा) भी ईश्वर भक्ति मे लगा रहता है।
2. मर्यादा पुष्टि जीवनः– जो जीव सांसारिक मोह त्यागकर वेद, उपनिषद आदि के अध्ययन से ब्रहम ज्ञान प्राप्त करता हुआ ईश्वर की ओर उन्मुख होता है, उसे मर्यादा जीव कहते है।
3. शुद्ध पुष्टि जीवः– जो जीव ईश्वर की भक्ति और प्रेम को अपना आलंबन बनाता है और स्वयं को पूर्णतया ईश्वर की शरण में समर्पित कर देता है। उसे शुद्ध पुष्टि जीव कहते है।

शुद्ध पुष्टि भक्त की सर्वाधिक ऊँची, सरल, शुद्ध और पवित्र स्थिति मानी गई है। इस स्थिति मे भक्त का ईश्वर से तादाम्य स्थापित हो जाता है। और उसकी सवो मानसी सवो बन जाती है। बल्लभाचार्य का मत था कि इस स्थिति को प्राप्त भक्त ईश्वर की अधिनता से मुक्त हो उससे अमर्यादित प्रेम करने लगता है। सरूदास द्वारा वर्णित गोपियों के स्वछंद प्रेम को इसी कोटि को माना गया है। गोपियाँ सांसारिक मर्यादाओं से ऊपर उठकर लोक– लाज–कुल आदि त्यागकर कृष्ण के प्रेम में डूबी हुयीं थी। सूरदास के अनेक पदों में इस पुष्टमार्गीय भक्ति का स्वरूप झलकता है।

''जब मोहन मुरली अधर धरी।
गृह त्यौहार तजे आरज पथ बसत न सकं करी।।''

पुष्टि मार्गी भक्ति माधुरी, प्रेमाभक्ति या रागानुभक्ति है, जिसमे कर्मकाण्ड की अपेक्षा नही है भगवान अनुग्रह करके जीव को अपने ही समान आनन्दमय बना देते है। अधिकांश कृष्ण भक्ति कवि पुष्टि मार्गीय थे। सरू के अनके पदों मे ईश्वर कृपा या अनुग्रह पर विशेष बल दिया गया है:–

1. ''जापर दीनानाथ ढरै।''
2. ''हरि की कृपा जापर होई।''
3. ''जाकौ दीनानाथ निवाजै।'' सरूदास के द्वारा जीव जगत, ब्रहम का विवचेन पुष्टिमार्ग के अनुरूप है। सरूदास को ''पुष्टिमार्ग का जहाज'' कहा जाता है। उनकी मृत्यु पर गोस्वामी बिट्ठलनाथ ने दुःखी होकर कहा था ''पुष्टिमार्ग का जहाज जात है सो जाको कछु लेना होय सो लेउ।'' सरू की गोपियो का व्यक्तित्व भी पुष्टिमार्ग स जुड़ा है। विरहणी गोपियां सब कुछ त्यागकर एक मात्र कृष्ण की शरण मे जाने की इच्छुक है। ज्ञान, योग, कर्मकाण्ड, मर्यादा का

त्यागकर केवल प्रेम के वश पर वे कृष्ण को अपने वशीभूत कर लेती हैं। पुष्टिमार्ग में तीन आसत्तियों का

वर्णन किया गया है– (1) स्वरूपासक्ति (2) लीलासक्ति

(3) भावासक्ति सरूदास ने लीलासक्ति को अपनाते हुए भगवान कृष्ण की विभिन्न लीलाओं का गान

अपने पदों में किया है। लीला का मुख्य अंग रासलीला है। सूरदास जी ने भक्ति विभोर होकर गोकुल स लेकर मथुरा तक की समस्त कृष्ण की लीलाओ का अपन पदों का विषय बनाया है उनके अनुसार इस लीला स्वरूप की अभिव्यक्ति नही की जा सकती। दूसरे शब्दो मे भगवान की कृपा के बिना कोई भी व्यक्ति इस रास की प्राप्ति नहीं कर सकता और यह रास प्राप्त प्रेम भाव में निवास करती है। बिना भगवद् प्रेम के यह प्रेम मात्र भाव भी प्राप्त नही हो सकता। सारांश रूप से यह कह सकते हे कि पुष्टिभक्ति का आशय प्रेम भक्ति है और यह प्रेम भक्ति बड़ी दुष्कर है, यह ईश्वर की कृपा से ही सम्भव होती है–

''प्रेम में निसदिन बसत मुरारी। प्रेम ही तन–धन, प्रेम ही जीवन, प्रेम ही पगे बनवारी।। प्रेम आहार–बिहार, निरन्तर प्रेम करत व्यवहारी। सरू श्याम प्रभु प्रेम रंगे है, और नहीं अधिकारी।।''

जब हरि लीला और पुष्टि मार्गीय भक्ति के नवीन रूप की बात कही जाती है तो इसका आशय प्रेम–भाव स होता है। जो कि ईश्वर कृपा से प्राप्त होता है। यह प्रेम सिद्धि ज्ञान, कर्म तथा योग आदि की अपेक्षा नहीं रखती। नारद भक्ति सत्रू में आसक्तियों के एकादश रूप बताये गए है। जिनमें से सूर का मन साख्यसक्ति, वात्सल्यसक्ति, कान्तासक्ति, रूपासक्ति और तन्मयासक्ति में अधिक रमा है।

कृष्ण गोपियो ंके हृदय मे ंएसे ेसमा गये हैं कि व ेअब किसी तरह उनके हृदय स ेनिकलते ही नही है। गोपियो ंकी इसी 'तन्मयासक्ति' का वर्णन इस पद में सूर ने किया है–

''उर मे माखन चोर गड़े।
अब कैसहूँ निकसत नहिं ऊधौ तिरछे है जू अड़े।।''

''विरहासक्ति'' को भृमरगीत के पदो ंमें वर्णित किया गया है। भक्ति के दार्शनिक स्वरूप का ध्यान रखते हुए सूरदास ने बल्लभाचार्य के ''शुद्धाद्वैतवाद'' की मान्यताओं को ग्रहण किया है। जीव को ब्रहम का अंग मानते हुए व ेउन दोनो ंका अद्धैत सम्बन्ध स्वीकार करते है। जीव की बुरी अवस्था माया के कारण होती है। यदि माया का प्रपंच नही तो जीव शुद्ध एवं अविकारी है। माया के कारण ही जीव जगत के प्रपंच मे ंफंसता है। इसीलिए सूर कृष्ण से जो मायापति है, इस माया का निवारण करने का अनुरोध करते है।

''माधव जी नेकु हटकौ गाय।''

बल्लभाचार्य ने संसार और जगत को अलग अलग माना है। उन्होनें जगत को सत्य और ससांर को असत्य माना है। जगत ईश्वर की इच्छा से निर्मित ईश्वर के सत् अंश का विस्तार है जबकि ससांर अविद्या के कारण उत्पन्न होता है और नश्वर है। कामिनी, कंचन, शरीर, भौतिक पदार्थ वैभव ये सभी ससांर है जबकि सृष्टि का अनादि का प्रवाह जगत है। जगत ब्रहम की शक्ति है जबकि संसार जीव की अविद्या का परिणाम है। सरू की भक्ति का मेरूदण्ड पुष्टिमार्ग है भगवान का अनुग्रह ही भक्ति का कल्याण करके उसे इस लोक से मुक्त करने में सफल होता है।

''सरूदास की इसी भक्ति की शक्ति को उद्धाटित करते हुए डॉ0 शिवकुमार मिश्र लिखते है–'' सूर की भक्ति, कविता, बैराग्य, निवृत्ति अथवा परलोक की चिन्ता नही करती बल्कि वह जीवन के प्रति असीम अनुराग, लोक जीवन के प्रति अप्रतिहत निष्ठा तथा प्रवृत्तिपरक जीवन पर बल देती है। सरूदास वस्तुतः एक भक्त कवि थे न कि तत्व चिंतन दार्शनिक।

सन्दर्भ ग्रन्थ सचूी–

1. प्रो0 राजकुमार शर्मा – सरूदास और भ्रमरगीत
2. डॉ0 अब्बास अली के0ताई – हिन्दी काव्य मे ंकृष्ण के विभिन्न रूप
3. डॉ0 सरोजिनी कुलश्रेष्ठ – हिन्दी साहित्य में कृष्ण